Discussion Report

Shri Shankar Shikshayatan organised a discussion on Pandit Madhusudan Ojha's two works, *Sanshayataduchhedavada* and *Smarthkundasamikshadhaya,* and the term,`skambh`, on April 27, 2019 in New Delhi. The speakers were Dr Vishnupadh Mahapatra, Dr Ramanuj Upadhyaya and Dr Ramaraj Upadhyaya of Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth.

Opening the discussion on *Sanshayataduchhedavada,* Dr Vishnupadh Mahapatra said `*sanshay*` or methodic doubt was an essential element of any discussion or debate. We contemplate on a subject only when we have a doubt. In *nyayadarshan* (one of the six systems of Indian philosophy), *sanshay* has been treated as a category. Unless we understand the essence of the subject, we cannot resolve our doubts about it. Dr Mahapatra pointed out Pandit Ojha has resolved the concept of doubt by taking references from the Veda. Based on these Vedic references, Ojhaji has presented his arguments on the subject in his book, *Brahmasidhanta,* wherein he has pointed out that the concept of doubt was part of the philosophy of Brahma.

In his presentation, Dr Ramanuj Upadhyaya said there were three meanings of the Vedic term, `skhamba`. These were—to create, to provide a base and to accept or become. In other words, `skhamba` is the *tatva* or essence which can create, be the foundation and acceptable. With these three qualities, Skhamba can said to be the synonym for Brahma. Skhamba is the basis of all creation. In its expanded form, skhamba becomes the basis of the entire universe. The Atharvaveda points out that every living being in this universe moves in order to reach this state. Ojhai has thus interpreted the term in transcendental and conventional context. Citing several Vedic hymns and works of Ojhaji, Dr Upadhyaya gave a vivid description of the term, skhamba.

Dr Ramaraja Upadhyaya, in his presentation on *Smarthakundasamikshadhyaya* said Ojhaji has given a detailed description of making *smarthakunda* (a fire pit created for paying offerings during prayers) and their practical aspects. According to Ojhaji, a smarthakunda has five components—*khath , kanta, mekhala*, *nabhi* and *yoni*. The book explains measurements of each components of *smarthakunda* in great detail.

The meeting was attended by Dr Santosh Kumar Shukla, Dr K. S. Satish, Dr Laxmikant Vimal, Dr Mani Shankar Dvivedi and Dr Bishnu Shankar Mahapatra.

प्रतिवेदन

श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा दिनांक २७.४.२०१९ को पं. मधुसूदन ओझा प्रणीत संशयतदुच्छेदवाद एवं स्मार्तकुण्डसमीक्षाध्याय ग्रन्थ तथा 'स्कम्भ' नामक वैदिक पारिभाषिक शब्द पर विशिष्ट व्याख्यान का समायोजन किया गया। इस व्याख्यान के लिए श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के डॉ. विष्णुपद महापात्र, डॉ. रामानुज उपाध्याय एवं डॉ. रामराज उपाध्याय वक्ता के रूप में आमन्त्रित थे ।

प्रथम वक्ता डॉ. विष्णुपद महापात्र ने संशयतदुच्छेदवाद के संशयाधिकरण को आधार बनाकर अपने वक्तव्य में बतलाया कि संशय एक विचारांग है । किसी भी विषय पर हम विचार तभी करते हैं जब तद्विषयक हमें संशय उपस्थित होता है । न्यायदर्शन में संशय को एक पदार्थ माना गया है। जबतक हमें तत्त्वबोध नहीं हो जाता तब तक संशय का निवारण नहीं होता है। उन्होंने बतलाया कि ओझाजी संशय का निवारण करने के लिए श्रुतिवाक्यों की सहायता लेते हैं । इस प्रकार श्रुतिवाक्यों की सहायता से ओझा जी संशयतदुच्छेदवाद में पूर्वपक्ष से सम्बद्ध संशयों का उच्छेद कर ब्रह्मसिद्धान्त में ब्रह्मवाद की स्थापना करते हैं ।

द्वितीय वक्ता डॉ. रामानुज उपाध्याय ने 'स्कम्भ' नामक पारिभाषिक शब्द पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि वैदिक वाङ्मय में स्कम्भ के तीन अर्थ बतलाये गये हैं-रचना करना, आधार प्रदान करना एवं धारण करना। अर्थात् वह तत्त्व जिसमें रचनाधर्मिता, आश्रयप्रदानता एवं धारणक्षमा रूप गुण विद्यमान हो वह स्कम्भ के नाम से जाना जाता है । इस प्रकार इन तीन गुणों के साथ यह स्कम्भ ब्रह्म का वाचक बन जाता है । अर्थात् स्कम्भ को ब्रह्म का नामान्तर कह सकते हैं। इस स्कम्भ से ही सम्पूर्ण सृष्टि होती है । यह स्कम्भ व्यापक रूप में समस्त संसार का आधार बनता है । इसने सारे संसार को अपने में धारण कर रखा है । अथर्ववेद के स्कम्भसूक्त के अनुसार संसार की सारी चीजें उस स्कम्भ को प्राप्त करने के लिए ही उस ओर गति करती हैं। ओझाजी ने स्कम्भ का प्रयोग पारमार्थिक अर्थ के साथ साथ लौकिक अर्थ में भी किया है । इस प्रकार वक्ता के द्वारा ओझाजी के ग्रन्थों एवं वेद के अनेक मन्त्रों का सन्दर्भ देकर स्कम्भ के स्वरूप पर व्यापक प्रकाश डाला गया ।

तृतीय वक्ता डॉ. रामराज उपाध्याय ने स्मार्तकुण्डसमीक्षाध्याय ग्रन्थ पर वक्तव्य देते हुए कहा कि ओझाजी ने इस ग्रन्थ में स्मार्त कुण्डों की निर्माण प्रक्रिया का समग्रता के साथ ही उनका व्यावहारिक विवरण प्रस्तुत किया है। कुण्ड के स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए ओझाजी ने कुण्डपञ्चाङ का वर्णन किया है जिसके अनुसार कुण्ड के पाँच अङ्ग होते हैं- खात, कण्ठ, मेखला, नाभि एवं योनि । खात का माप क्या होना चाहिए, मेखला कितने अङ्गुल की होगी, कण्ठ का स्वरूप कैसे होगा, योनि किस प्रकार की होगी आदि का साङ्गोपाङ्ग विवेचन ओझाजी ने किया है, जिसका सरलतया प्रतिपादन उपाध्यायजी ने अपने वक्तव्य में किया ।

इस विशिष्ट व्याख्यान में श्रोता एवं परिचर्चक के रूप में डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल, डॉ. के. एस. सतीश, श्री विल्सन जॉन, डॉ. लक्ष्मीकान्त विमल, डॉ. मणि शंकर द्विवेदी, डॉ. विष्णु शंकर महापात्र आदि उपस्थित थे।